रिकॉर्ड:- इस पाप की दुनिया से..... ओम शान्ती प्रात: क्लास 7-1-1967

मीठे-2कहीं दूर दुनिया में चलने- वालेरुहानी बच्चों प्रति बाप गुड मार्निंग भी कर रहे हैं।रुहानी बच्चे जानते नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कि हम कोई कहीं दूर जा रहे हैं।कहां?अपने स्वीट साईलेन्स होम शान्ती धाम जो दूर दूर है।स्वर्ग कोई दूर नहीं है।शान्ती धामदूर है जहां से हम आत्मायें आती हैं।वो है मूल वतन। यह है स्थूल वतन। वो है हम आत्माओं का घर। उस घर में बाप बिगर तो कोई ले जा नहीसकते। तुम सब ब्राह्मण व ब्राह्मणियां रुहानी सेवा कर रहे हो। किसने सिखाई है? दूर ले चलने वाले बाप।कितनों को ले जावेंगे? अणगनित है। एक पण्डे के तुम बच्चे भी कितने पण्डे हो। तुम्हारा नाम ही है पाण्डव सैना। तुम बच्चे हर एक को दूर ले चलने लिये युक्ति बताते हो। मनमनाभव।बाप को याद करो। कहते भी हैनों इस दुनिया से कहीं दूर ले चलो।नई दुनियामें तो ऐसे नही कहेंगे नां। यहा है रावण राज्य तो कहते है कि इससे दूर ले चलो जहां चैन हो। इसका नाम ही है दुख धाम। अब बाप तुमको कोई धक्का नही खिलाते है।भक्ति मार्ग में तुम बाप को ढूंढने लिये कितने धक्के खाते हो। बाप खुद कहते है मैं हू ही गुप्त। इन आखों से कोई देख नही सकते है। मुझे पैर हैं नही। कृष्ण के मन्दिर में माथा टेकने लिये चरवडी रखते है।। मैं तो पैर है नही जो तुमको माथा टेकना पड़े। तुमको तो सिर्फ कहता हू लाडले बच्चो:- तुम बच्चे भी औरों को कहते हो भाईयों परलोकि किक बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जावें। बस और कोई तकलीफ नहीं है। जैसे बाप हीरे जैसा बनाते है बच्चे भी औरों को हीरे जैसा बनाते है। यह सिखाना है मनुष्यों को हीरे जैसा कैसे बनावे। ड्रामा अनुसार कल्प पहले मुआफिक कल्प-2 कल्प के संगम पर बाप आकर हमको सिखाते है हम फिर औरों को सिखाते है। बाप हीरे जैसा बना रहे है। तुमको मालूम है एक खोजों का गुरु है उन्होंने उनको सोनें,चांदी,हीरा में वजन किया था। नेहरु को सोने में वजन किया था। उनको तो हीरो में किया था। इतने हीरे कहां से लायें? था भी आखान बहुत मोटा। विलायत से उधार पर हीरे लिये थे। वजन कर और व वापस दे दिये। अब वो कोई हीरे जैसा बना था क्या? कैसे-2गन्दे काम करते रहते। कितना अपराधी है। अभी बाप जो तुमको हीरे जैसा बनाते हैं किसमें वजन करना चाहिये। तुम हीरे आद क्या करेंगे। वो लोग तो रेस में बहुत पैसे उड़ाते रहते है। मकान प्रापर्टी बनाते रहते है। तुमको तो प्रापर्टी कुछ भी बनानी नही है। हुक्म नही है। तुम कोई से लो तो फिर 2।जन्मों लिये भर कर देना पड़े। तुम बच्चे तो सच्ची कमाई कर रहे हो। बाकी सबकी है झूठी कमाई। खतम हो जाने वाली है नही तो बाबा ऐसे क्यों करते। बाबा ने देखा यह तो कौड़ियां है हमको तो हीरे मिलते है। तो फिर यह कौड़ियाँ क्या करेंगे। क्यों नां बाप से बेहद का वर्सा ले लेवें। खाना तो मिलना ही है। एक पहाका भी है हाथ जिसका ऐसे पीला पूर वे पाये लेते। बाप को शराफ भी कहते है। तो बाप कहते है मैं तुम्हारी हर पराई चीज से एक्सचेंज करता हूं। कोई मरता है तो पुरानी चीजें करनीगोर को दे देते है नां। बाप कहते है मैं तुमसे लेता क्या हूं। यह सैमपुल देखो।द्रोपदी भी कोई एक तो नही थी नां। तुम सब द्रोपदीयां हो। बहुत पुकारती है नां हमको नगां नंगा होने से बचाओ। बहुत मारते है। हाथ पांव बांधे लेते है फिर हम क्या करें। बेहोश कर लेते है। ऐसे हालात में हमारे ऊपर दोष है? बाप कहते है नही बच्चे। तुम्हारे ऊपर पाप नही आता है। तुम परवश हो। दिल से तो गन्द नही करते हो नां। बाप कितने प्यार से समझाते है बच्चे यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। बाप कहते है नां बच्चों को कि मेरी दाढ़ी की लाज रखो। कुल को कलंक नही लगाना। तुम मीठे-2बच्चों को कितना फखुर होना चाहिये। बाप तुमको हीरे जैसा बनाते है। इनको भी वो बाप हीरे जैसा बनाते है। उनको याद करना है। यह बाप कहते है मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगें। मैं बाप की श्रीमत लेकर तुमको देता हूं। तो याद बाप को करना है। मैं तुम्हारा गुरु नही हूं। वो हमको सिखाते है। हम फिर तुमको सिखाते है। हीरे जैसा बनना है तो बाप को याद करो। बाप ने समझाया है भक्ति मार्ग में हम कोई देवता की भक्ति करते रहते है फिर भी पुरी दुकान, धन्धे आद तरफ आसक्ति है।

क्यों कि इससे आमदनी होती है। बाबा की बुद्धी इधर उधर भागती थी तो अपने को चमाट मारते थे कि यह याद क्यों आता है। तो अब हम आत्माओं को एक बाप को ही याद करना है। परन्तु माया घड़ी2 याद भुला देती है। गुस्सा लगता है माया बुद्धी योग क्यों तोड़ देती है। ऐसे -2 अपने साथ बातें करनी चाहिये। बाप कहते हैं अपना भी कल्याण करो। दूसरों का भी कल्याण करो। सेन्टर्स खोलो। ऐसे बहुत बच्चे लिखते हैं बाबा फलानी जगह सैन्टर खोलो। बाप कहते है मै तो दाता हूँ। हमको कुछ दरकार नही है। यह मकान आद भी तुम बच्चों के लिये बनाया है नां। शिव बाबा तो तुमको हीरे जैसा बनाने आये हैं। तुम जो कुछ करते हो वो तुम्हारे ही काम में आता है। यह कोई गुरु आद नही जो चेला आद बनावें। मकान बच्चे ही बनाते हैं। अपने रहने लिये। हां बनाने वाले भी आ जाते है तो खातरी की जाती है। बाप ऊपर में नये मकान में जाकर रहो। कोई तो कहते है हम नये मकान में क्यों रहें। हमको तो पुराना ही अच्छा लगता है। जैसे आप रहते हो वैसे हम भी रहेंगे। हमको कोई अंहकार नही है कि मैं देता हूँ। बाप दादा ही नही रहते है तो फिर मैं क्यों रहूँ। हमको भी अपने साथ रखाओ। जितना अधिक नजदीक होंगे उतना अच्छा है। बाप समझाते है तो जितना पुरुषार्थ करेंगे तो सुख धाम में ऊंच पद पावेंगे। स्वर्ग में तो सब चलेंगे नां। भारतवासी जानते है भारत पुण्य आत्माओं की दुनिया थी। पाप का नाम नहीं था। अभी तो पाप आत्माओं की दुनिया है। यह है रावण राज्य। सतयुग में रावण होता नही। रावण राज्य होता ही है आधा कल्प बाद। कितना समझाया जाता है परन्तु बन्दर बुद्धी समझते ही नही हैं। गायन भी है बन्दरों के आगे रत्न रखो तो उसको पत्थर समझ कर फैंक देंगे। बाप इतना समझाते है तो भी समझते नही हैं। कल्प-2 ऐसे होता आया। नई बात नही है। तुम प्रदर्शनियां करते हो कितने ढेर आते है। प्रजा तो बहुत बनेगी। हीरे जैसा बनने में तो टाईम लगता है। प्रजा बन जावें वो भी अच्छा। अभी है ही क्यामत का समय। सभी का हिसाब किताब चुक्तु होना है। माला जो बनी हुई है वो है पास विथ आनर्स। 8 दाने ही नम्बरवन में जाते है। जिनको जरा भी सजा नही मिलती है? कर्मातीत अवस्था को पा लेते हैं। फिर है 108 नम्बरवार तो होंगे नां। यह बना बनाया अनादी ड्रामा है जिसको साक्षी होकर देखते है कि कौन अच्छा पुरुषार्थ करते हैं। जैसे देखो मोहिनी (देहली वाली) बच्ची पीछे आई है। श्रीमत पर चलती रहती है। ऐसे ही श्रीमत पर चलती रहे तो पास विथ आनर्स 8 की माला में आसकती है। हाः- चलते-2 कब-2 ग्रहचारी भी आ जाती है। यह सबकी लाही चाढ़ी आती है। यह कमाई है। कब बड़ी खुशी में रहेंगे। कब कब। माया का तूफान अथवा किसीका संग थोड़ा हटा देता है। गाया भी हुआ है संग तारे कुसंग बोड़े। अब रावण का संग बोड़े। राम का संग तारे। रावण की मत ही ऐसी है। देवतायें भी वाम मार्ग में जाते हैं तो उनके चित्र कैसे गन्दे दिखाते हैं। यह निशानी है वाम मार्ग में जाने की। भारत में ही राम राज्य था। भारत में ही अब रावण राज्य है। रावण राज्य में 100% दुखी बन जाते हैं। यह खेल है। यह नालेज किसीको भी समझाना बड़ा सहज है। बाबा इस बच्ची को कहते है तुम नर्स हो वो सर्विस भी करती रहो। तो साथ-2 तुम यह सर्विस भी बहुत कर सकती हो। पेशेन्टस को भी यह ज्ञान सुनाती रहो कि बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। फिर 21 जन्मों लिये फिर तुम रोगी नही बनेंगे। योग से हैल्दी और इस चक्र को जानने से वैल्दी बनते है। तुम तो बहुत सर्विस कर सकती हो। बहुतों का कल्याण करेगी। पैसे भी जो मिलेंगे वो भी इस रूहानी सेवा में लगावेंगी। वास्तव में तुम भी सब नर्स हो नां। छी-2 गन्दे मनुष्यों को देवता बनाने। यह नर्सपना है। बाप भी कहते है मुझे ईंटी पतित मनुष्य बुलाते हैं कि आकर पावन बनाओं। तुम भी रोगियों की यह रूहानी सेवा करो तो तुम पर वो कुर्बान जावें। तुम्हारे दवारा सा0 भी हो सकता है। अगर योग युक्त हो तो। बड़े-2 सर्जनस आद तुम्हारे पांवों पर आकर पड़ें। तुम करके देखो। यहां बादल आते है फिरिश्ता होने फिर जाकर वर्षा कर रिफ्रेश करेंगे। कई बच्चियों को यह पता नहीं रहता कि वर्षा कहां से आती है। समझती है इन्द्र वर्षा करते है। इन्द्र धनुष कहते है नां। शास्त्रों में कितने

ह कथायें है। बाप कहते है यह फिर भी [illegible]। ड्रामा में नूंध है। हम किसीकी निन्दा नही करते है। यह
तो बना बनाया ड्रामा है। समझाया जाता है कि यह भक्ति मार्ग है। कहते भी है ज्ञान भक्ति वैराग। बच्चों
को इस पुरानी दुनिया से वैराग है। गृहस्थ व्यवहार में रहते पुरानी दुनिया से वैराग है। आपी मरे मर गई
दुनिया। आत्मा शरीर से अलग हो गई तो दुनिया ही खलास। तो बाप बच्चों को समझाते है पढ़ाई में गफलत
मत करो। सारा मदार पढ़ाई पर है। बैरिस्टर कोई तो एक केस का लाख रुपया कमाते है, और कोई बैरिस्टर
को कोट भी नही होगा। पढ़ाई पर मदार है। यह पढ़ाई तो बहुत ऊंची है। स्वदर्शन चक्र धारी बनना है।
अर्थात अपने 84जन्मों की आद मध्य अन्त को जानना है। अब इस सारे झाड़ की जजरीभूत अवस्था है।
(बड़ के झाड़ का मिसाल) फाउंडेशन है ही नही। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। वैसे यह आदी सनातन देवी
देवता धर्मजो था वो अभी है नही। धर्म भ्रष्ट कर्म भ्रष्ट बन गये हैं। यह ड्रामा राज़ बाप बैठ समझाते है। मनुष्य
मनुष्य किसीको सदगती दे नही सकते। वो तो दुर्गती ही करेंगे। लौकिक गुरु सब दुर्गती करने वाले ठहरे।
इस लिये बाप कहतेहै इन गुरुओं को मारो गोली। कन्याओं द्वारा ज्ञान बाण मरवाये है। बाकी मारने की कोई
बात ही नही है। फिर कहते है गंगा जल निकाला वो उनको पिलाया। कितनी बातें लिख दी है। ऐसे भी बहुत
होते है जो गंगा जल विलायतमें भी साथ ले जाते हैं। शंकराचार्य भी गंगा जल पीता रहता है उसको अमृत
कहते है। अब है तो वो पानी। जरूर पापात्मा है तब तो गंगा जल पीते है ना। पतित है तब तो गंगा पर
स्नान करने जाते है। बाप बैठ कर यह सब बातें समझाते है बाप को ही याद करते है बाबा हमारे दुख हर
सुख दो, तुम सदा के लिये सुखरी बन जाते हो। कब अकाले मृत्यु नही होगा। फलाना मर गया यह अक्षर
कभी होते नही है। यह बादशाही नही। तो बाप राय देते है बहुतों को रस्ता बताओगी। जो वो तुम पर
कुरबान जावेंगे किसीको सा० भी हो सकता है। परन्तु सा० है सिर्फ एम आब्जेक्ट। इसके लिये पढ़ना तो पढ़े ना।
पढ़ने बिना थोड़ेई बैरिस्टर बन जावेंगे। ऐसे नही कि सा० हुआ याना मुक्ति हुई। मीरा को सा० हुआ ऐसे
नही कि वो कृष्ण पुरी चली गई। नौधा भक्ति करने से सा० होता है। यहां फिरकर नौधा याद। वो भक्ति दुर्गती है।
यह है सदगती। रामतीर्थ भी कृष्ण का भक्त था। कृष्ण के दिदार केलिये अपनी छाती चीरने लगा तो सा० हो गया।
अच्छा सा० हुआ तो फिर क्या हुआ। भक्त था वैकुण्ठ में नही गया। वो तो सन्यासी बना है। सन्यासी फिर
भक्ति कर ना सके। वो फिर ब्रह्म ज्ञानी तत्व ज्ञानी बन गया। ब्रह्म में लीन होना है। अब तो ब्रह्म परमात्मा
हो गये है। भक्ति मार्गमें कितना बोलते है (मीरा का मिसाल) तो बाप बच्चों को सब राज़ समझाते है। कहते है
ना। धन्धा आद शरीर निर्वाह के लिये भी भले करो। परन्तु सन्डर। अपने को दूटी समझ कर। तो ऊंच पद मिलेगा।
ममत्व मिट जावेगा। यह बाबा लेकर क्या करेगा। इसने तो सब छोड़ा ना। घर बार वा महल आद भी बनाना
तो है। यह मकान बनाते है क्यों कि ढेर बच्चे आवेंगे। आबू रोड़ से लेकर यहां तक क्यू लग जावेगी। तुम्हारा
तो प्रभाव निकले तो माथा ही खराब कर देवें। बड़े आदमी आते है तो कितनी भीड़ हो जाती है। तुम्हारा
नाम ? बलना है पिछाड़ी में अभी नही। भले कोई भी बड़ा आदमीहो राजा हो मिल नही सकेंगे। पहले 7रोज
में रहे तो आ सके। अभी तक तो बहुत पुरुषार्थ करना है। बाप को याद करने का अभ्यास करना है
ताकी पाप कट जावें फिर यह शरीर छोड़ना पड़े। ऐसे ही याद में शरीर छोड़ना है। सतयुग में शरीर
छोड़ेंगे समझेंगे यह छोड़ दूसरा नया लेंगे। जैसे सर्प का मिसाल है। सन्यासियों को थोड़ेई यह पता है कि स्वर्ग मे
शरीर छोडते है। वहां अकाले मृत्यु कभी होती नही है। सा० होता है बस, आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरे में
जाकर प्रवेश करती है। यहां तो देह का अभिमान कितना रहता है। पदक हैनां। यह सब बातें नोट करनी और
करनी चाहिये। औरों को भी अपने समान हीरे जैसा बनाने पड़े। कितना पुरुषार्थ करेंगे ऊंच पद पावेंगे। यह बाप
समझाते है। यह कोई साधु महात्मा नही है इस पर एक गीत भी बनाया हुआ है। साधु सन्त... वो तो सुख
रूपा कह कर ग्लानी करते है। बाप आकर स्वर्ग बनाते है उनकी ग्लानी कर देते है। अच्छा ओम शान्ती